



दादीजी से आशीर्वचन लेते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी।

यू.पी.ए.अध्यक्षा सोनिया गांधी के साथ दादीजी

दादी मनोहरइन्द्रा, दादी गंगे, दादी रतनमोहिनी, दादी हृदमोहिनी, दादी जानकी, दादी प्रकाशमणि, दादी निर्मलशांता एवं दादी चन्द्रमणि समूह चित्र में।

दादी प्रकाशमणि...

-पेज 1 का शेष

साथ बिता पाता और उनसे हर पल कुछ सीखता। हमारे दिलोदिमाग से दादी जी की याद को निकाला नहीं जा सकता परन्तु उनके स्मृति दिवस पर केवल उनको प्यार से यादकर आँसू बहाना या भावुक हो जाना क्या इससे दादी जी खुश होंगी? या फिर दादी जी के गुणों को और कर्तव्यों को, उनकी उम्मीदों और आशाओं को, उनके रहे हुए अधूरे वृहद कार्य को, हमारे द्वारा पूर्ण होते हुए देखकर खुश होगी?

इस बार हम उनका छठा अव्यक्ति दिवस मना रहे हैं तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। अपने को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी अन्तरात्मा को टटोलने की यह घड़ी है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। तो क्या उनकी विशेषताओं को मैंने भी अपने जीवन में धारण किया है? अगर हाँ तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी स्मृतियाँ याद होगी।

दादी जी की याद में हम प्रकाश स्तम्भ के आगे जाकर मौन खड़े रहते हैं। उस समय दादी और उनके द्वारा मिली हुए सर्व शिक्षायें, चित्र फीती की तरह एक-एक कर अर्न्तदृष्टि के आगे सरकती जाती है। और हमारे यादों के बगीचे के फूलों को नयी सुन्दरता और खुशबू से भर देती हैं। उस चित्र फीती का पहला चित्र सामने आता है और दादी जी, हम आप जैसी एक आम व्यक्ति के रूप में देखते हैं।

दादी जी - असामान्यता में सामान्यता

जब इन्सान महान बनता है तो कभी-कभी अपनी निजी मानवता को छोड़ देता है परन्तु दादीजी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अन्दर के इन्सानी जज्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते हैं तो इन्सानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी के इस बेहद निजी पहलू पर हमारी नजर शायद न गई हो लेकिन इस बात पर भी अगर हम गौर

करें तो दिखता है कि कैसे दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थी। सर्दी हो या बारिश हर आने वाले छोटे-बड़े व्यक्ति के गर्म कपड़े या बरसाती का ध्यान दादी जी रखती थी। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाई है।

यज्ञ में कोई बीमार हो या अस्पताल में कोई भी पेशेन्ट हो, दादी जी ने स्वयं मिलकर या किसी को भेजकर हमेशा उनका ख्याल रखा है। किसी पर भी उनके किसी निर्णय से अन्याय न हो इस बात का दादी जी ने सदा ध्यान रखा है। दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कहीं सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया

अभी-अभी आई हुई कुमारी को सखीपन का अनुभव वह बड़ी सहजता से करा देती थी। मुरली को पढ़कर ऐसा आत्मसात् कर लेती थी कि जब वे सुनाती थीं तो सुनने वाले को भी वह स्वतः आत्मसात् हो जाती थी। 70 साल से नियमित ज्ञानयोग की पढ़ाई करते रहने के बावजूद पढ़ाई के प्रति उनके उत्साह व लगन को किसी नये विद्यार्थी की तरह ही तरोताजा देखा गया।

और हाँ किसी की नजर तीक्ष्ण हो तो उनके अन्दर छिपे हुए इन्सेन्ट बच्चे को उसने अवश्य देखा होगा। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना उनकी आकर्षक छवि में चार चांद लगाता था। दादी जी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र

आसपास की हवाओं पर इतनी रुहानी खुशबू फैला देती थी कि दूर कोने में बैठा व्यक्ति भी महसूस करता कि वह कहीं आसपास ही है।

हरेक के अन्दर छिपे हुए गुणों की अचूक परखकर उसके उस गुण या कला को बाबा की

और उस व्यक्ति को उस नजर से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई नौकर, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी भी नजर नहीं पड़ती थी ऐसे कोने में चुपचाप खड़े व्यक्ति पर दादी जी की नजर पड़ती थी और वह खास उस व्यक्ति का ख्याल रखती थी। मतलब कि दादी जी के इन्सानी जज्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा है।

दादीजी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी मां, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊंचाईयों तक पहुंचाने वाली निश्चय की महामेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परन्तु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। किसी से भी कोई नई बात सीखने और समझने में उनको कभी भारी नहीं लगता था। उम्र से इतनी बड़ी होने के बावजूद

सेवाओं में लगाने की कला को केवल उन्हीं से सीखी जा सकती है। वे न केवल उस व्यक्ति के गुण और कला की परख करती थी बल्कि कद्र भी करती थी और समय पर सबके सामने उसका वर्णन भी करती थी। अन्त में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वह मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं लेकिन उनकी प्यारी सी मुस्कराहट को हम सभी मिस करते लेकिन उनकी नजरों में हमें पहचानने के चिन्ह दिखाई देते। उस समय भी उनकी एक दृष्टि को पाने के लिए हजारों लोग शान्ति और धैर्यता से लम्बी कतार में खड़े रहते थे। दादी जी ने अन्तिम श्वांस तक हर पल बाबा की सेवा में बिताया। आज भी उनकी ही सेवाओं का मीठा फल हम सब खा रहे हैं

ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सन्मुख है। उनके जीवन और जज्बे को हमारा शत् शत् प्रमाण और श्रद्धांजली।

दूसरों से अपेक्षा रखने का स्वभाव हमारी खुशी को प्रभावित करता है

प्रश्न:- दूसरों की अपेक्षा का मतलब क्या होता है?

उत्तर:- अपेक्षा का मतलब दूसरे के द्वारा भविष्य में किये जाने वाले व्यवहार को पहले बता देना कि मैं विश्वास करती हूँ कि आप ऐसा करेंगे। आप क्या करने वाले हैं उसका मैं पहले से ही अनुमान लगा लेती हूँ।

प्रश्न:- मैंने तो आपके व्यवहार का पहले से ही अनुमान लगा लिया था। और जब आपका व्यवहार वैसा नहीं हुआ, मैंने जो आपसे अपेक्षा बनाकर रखी थी तो मैं कहती हूँ कि आप मेरी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरे। हमें अपने-आप से तार्किक रूप से ये पूछना पड़ेगा कि यह उपाय कितना अच्छा है! अब प्रश्न उठता है कि 'मैं कौन हूँ'?

उत्तर:- 'मैं कौन हूँ' यह तो स्वयं एक प्रश्न है, फिर भी लोग कहते हैं कि क्यों पैरेंट बच्चे से उम्मीद न करे, पति-पत्नी एक-दूसरे से उम्मीद न करे, टीचर अपने स्टूडेंट से उम्मीद न करें, ये एक ऐसी चीज है जिसे छोड़ना बहुत ही कठिन है।

प्रश्न:- वास्तव में हमें वो तब तक पता नहीं चल पाता जब तक की वो फेल नहीं होता कि मैंने उससे क्या उम्मीद किया था।

उत्तर:- अब सारे दिन में हमें ये देखना है कि हमारी अपेक्षा का आधार क्या है। आप जिस तरह से बोलते आये हैं मेरे साथ कल भी इसी तरह से बात करेंगे। लेकिन कल आपने एक अलग तरीके से बात की जो कि मेरी आशा के एकदम विपरीत थी। किसी के अतीत के साथ उसको तुलना करना की पहले ये जैसे बात करते आये थे अब भी वैसा ही करेंगे। यह मैं पहले से ही दूसरे के लिए निर्णय ले लेती हूँ और फिर जब वो वैसा नहीं करते हैं तो मैं हीन भावना से ग्रसित हो जाती हूँ। अब हम दो बातों में फंसते हैं - एक तो औरों से अपेक्षा करना और दूसरा दूसरों की उम्मीदों को पूरा करना। ये दोनों चीजें हमारी खुशी को बहुत ज्यादा प्रभावित करती है।

प्रश्न:- बच्चे कितनी बार कहते हैं, पालक कितनी बार बोल रहे होते हैं कि मुझसे क्या चाहिए या आप मुझसे क्या उम्मीद करते हैं?

उत्तर:- इन दोनों उदाहरणों में क्या है? यदि आप मेरी अपेक्षा को पूरा करते हैं तो मैं खुश रहूँगी, यदि मैं आपके उम्मीदों को पूरा करती हूँ तो क्या आप खुश होंगे? इन दोनों चीजों में अपेक्षा का खुशी के साथ सीधा संबंध है। हमें ये देखना पड़ेगा कि हमने अपनी खुशी को किन चीजों पर निर्भर कर दिया है कि भविष्य में ये क्या करेंगे, कैसे बात करेंगे, कैसे व्यवहार करेंगे, वो मैं पहले आशा करती हूँ और उसके ऊपर अपनी खुशी को निर्भर कर देती हूँ, फिर वो वैसा नहीं करते तो मैं दुःखी हो जाती हूँ।

प्रश्न:- अब हम बिल्कुल उसी धारणा पर आ गये हैं जिस पर हमारा पूरा ढांचा खड़ा है। अभी तक आप मुझसे एक तरह से व्यवहार करते हुए आये, एक तरह से बात करते हुए आये। अगर आप मुझसे अलग तरह से बात करोगे तो यह नैचुरल है कि मुझे इससे दुःख पहुंचेगा।

उत्तर:- नैचुरल है कि दुःख पहुंचेगा क्योंकि आपने मेरे व्यवहार को देखकर अपना भरोसा(बिलीव सिस्टम) बदल लिया। ये बहुत मुश्किल हो जाता है कि हम भविष्य के व्यवहार पर अपनी खुशी को निर्भर कर देते हैं तो वो खुशी कैसे स्थायी रहेगी? वो तो एक भविष्य का कल्पना है जिसे हम भविष्य से संबंधित कह सकते हैं। अगर हमारी वो कल्पना सही नहीं निकली तो मेरी खुशी गई। और फिर मैं उसका दोष किस पर डाल देती हूँ - आप पर, क्योंकि आपने मेरी अपेक्षाओं को पूरा नहीं किया। मैंने अपेक्षा पहले निर्मित क्यों किया?



-ब.कु.शिवानी